Vol 3 Issue 4 oct 2013

Impact Factor : 1.2018 (GISI)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-4, Oct-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

GRT

आदिवासियों के विकास में सामुदायिक रेडियो की भूमिका
(सेहरिया जनजाति का अध्ययन)

साकेत रमण
सहायक प्राध्यापक, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला, देवी अहिल्या विवि, इंदौर

सारांश : देश का यह बड़ा वर्ग शोषित, वंचित और परित्यक्त है, परंतु मुख्य धारा की मीडिया के केन्द्र में कौन कहे, परिधि में भी इनके लिए कोई जगह नहीं है। मीडिया संगठन चरखा के 2005 में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार मुख्यधारा की मीडिया में जनसरोकारों या आम आदमी से जुड़े मसलों को मात्र 2 फीसदी जगह ही मिल पाती है। ऐसे में आम आदमी के लिए सामुदायिक रेडियो एक वरदान साबित हुआ है। मध्यप्रदेश राज्य के अशोकनगर जिले के चंदेरी कस्बे में एक आवाज गूंजती है, जिसने वहां के आदिवासी समाज के जागरूकता एवं विकास को एक नई दिशा दी है। चंदेरी की आवाज ने सेहरिया जनजाति की जीवनशैली में परिवर्तन की कमोबेश शुरूआत की और इनकी आवाज और समस्याओं को कुछ हद तक प्रसारित एवं प्रकाशित करने का कार्य किया। प्रस्तुत अध्ययन में चंदेरी कस्बे में रहने वाली सेहरिया जनजाति के विकास में वहां संचालित सामुदायिक रेडियो की सैंपल सर्वे के माध्यम से भूमिका का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तवाना :

वर्तमान दौर में जब हम संचार क्रांति, इंटरनेट क्रांति, सूचना क्रांति की बात करते है, वहीं देश का एक तबका आज भी इन सारी क्रांतियों से अछूता है। एक प्रकार से परित्यक्त, वंचित एवं मूक यह वर्ग न तो इन क्रांतियों से परिचित है न ही इसके प्रति जागरूक। इनकी समस्याएं, इनकी परेशानियां, इनकी जीवनशैली या फिर दूसरे शब्दों में कहे तो इनका संपूर्ण जीवन ही समाज की मुख्य धारा से कटा है। यह वर्ग है हमारे देश का आदि–निवासी या आदिवासी समूह। इन समूहों तक मीडिया की पहुंच शून्यप्राय है। ऐसी ही एक जनजाति है–सेहरिया जनजाति। यह जनजाति मूलतः राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में पाई जाती है। मूल रूप से ये आदिवासी समूह मुंडा भाषा वर्ग से संबंधित है।

मध्यप्रदेश में ये मोरेना, शिवपुर, भिंड, दतिया, ग्वालियर, शिवपुरी, विदिशा, गुना एवं अशोकनगर जिले में पायी जाती है। इस जनजाति के उद्भव से संबंधित कई प्रकार की किंवदंतिया प्रचलित है। इस संबंध में मान्यता है कि सेहरिया शब्द का अर्थ बाघ का मित्र है। जहां से का अर्थ है, साथी या सहयोगी और हरिया का अर्थ है, बाघ। हालांकि सामान्य मान्यता यह है कि इस जनजाति को इसका वर्तमान नाम सेहरिया शाहाबाद के किसी मुसलमान शासक ने दिया था। जिसने इनको यह उपाधि जंगल के निवासी होने के कारण से दी।

क्योंकि अरबी में सहर का अर्थ मरूस्थल या जंगल है। यह जनजाति हिंदू धर्म एवं विश्वासों को मानती है। इनके प्रमुख देवता तेजाजी, धाकड़ बाबा, दुर्गा मां, हनुमानजी, लालबाई एवं बिजासन है। इनके प्रमुख त्योहारों में जन्माष्टमी, श्रावणी अमावस्या, रक्षा–बंधन, दीपावली, होली एवं तेजा दशमी है।

देश का यह बड़ा वर्ग शोषित, वंचित और परित्यक्त है, परंतु मुख्य धारा की मीडिया के केन्द्र में कौन कहे, परिधि में भी इनके लिए कोई जगह नहीं है। मीडिया संगठन चरखा के 2005 में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार मुख्यधारा की मीडिया में जनसरोकारों या आम आदमी से जुड़े मसलों को मात्र 2 फीसदी जगह ही मिल पाती है। ऐसे में आम आदमी के लिए सामुदायिक रेडियो एक वरदान साबित हुआ है। सामुदायिक रेडियो, जो कि रेडियो का एक प्रकार है, ने भारत के ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सामुदायिक रेडियो ने आम आदमी या जिसे समाज का अदना आदमी कहा जाता है, को अभिव्यक्ति का एक बेहतर मंच उपलब्ध कराया है। इस प्लेटफार्म के माध्यम से समाज का सबसे कमजोर तबका भी अपनी बात, अपना संदेश समाज के अन्य वर्ग समूहों एवं सरकार तक पहुंचाने में सक्षम हो सका है। हालांकि यह भी आक्षेप लगाया जाता है कि भारत में सामुदायिक रेडियो संगठन, जनसरोकारों को बहुत महत्व नहीं देते परंतु यह भी सत्य है कि यहां सामुदायिक रेडियो अपने शैशव–काल में है। ये संगठन जन आकांक्षाओं पर पूरी तरह से खरे नही उतर रहे है, फिर भी ग्राम्य विकास एवं आम–आदमी की आवाज बुलंद करने में इनकी भूमिका को कमतर नहीं आंका जाना चाहिए। जैसा कि डॉ. कंचन के. मल्लिक की राय है कि स्वतंत्र रूप से बोलने और अभिव्यक्ति की आजादी संपूर्ण विश्व में सामुदायिक रेडियो की पहचान है और भारत में भी वे इस ओर तेजी के साथ अग्रसर हो रहे है।

वर्ष 2011 में मध्यप्रदेश सरकार ने राज्य के सभी जनजाति बहुल ब्लॉक में 110 कम्यूनिटी रेडियो स्टेशन शुरू करने की घोशणा की थी। जिसमें भील, सेहरिया, बैंगा, कोरकू, भरिया, गोंड बहुल इलाकों को सबसे ज्यादा महत्व दिया गया। राज्य के शिवपुरी में रेडियो धड़कन और अशोकनगर में चंदेरी की आवाज सामुदायिक विकास में महती भूमिका निभा रहे है। चंदेरी की आवाज ने सेहरिया जनजाति की जीवनशैली में परिवर्तन की कमोबेश शुरूआत की और इनकी आवाज और समस्याओं को कुछ हद तक प्रसारित एवं प्रकाशित करने का कार्य किया। प्रस्तुत अध्ययन में अशोकनगर जिले के चंदेरी कस्बे में रहने वाली सेहरिया जनजाति के विकास में चंदेरी की आवाज (सामुदायिक रेडियो) की भूमिका का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य :

सेहरिया आदिवासियों की आवाज को बुलंद करने में सामुदायिक रेडियो की भूमिका का पता लगाना।

आदिवासियों की समस्याओं को प्रकाशित करने में चंदेरी की आवाज की भूमिका का अध्ययन करना।

सामुदायिक रेडियो के कारण सेहरिया समुदाय में आई जागरूकता का पता लगाना।

अध्ययन प्रविधि

सैंपल सर्वे :

क्योंकि जनजातीय समाज का दायरा, उनकी सोच, उनके सामाजिक संवाद का तरीका एवं उनकी प्रकृति बहुत ही विविधतापूर्ण होती है। एक तो इस प्रकार के अध्ययनों की सबसे बड़ी समस्या आदिवासियों मे व्यापक पैमाने पर निरक्षता का होना है। किसी भी अध्ययन में अशिक्षित उत्तरदाताओं को अध्ययन में शामिल होने के लिए तैयार करना सबसे बड़ी समस्या होती है। अतः विषय की समझ रखने वाले उत्तरदाताओं के चयन के लिए सैंपल सर्वे विधि का चुनाव किया गया। सैंपल सर्वे के माध्यम से समस्या की जानकारी रखने वाले उत्तरदाताओं का उद्देश्यपूर्ण एवं सुविधाजनक निदर्शन विधि के माध्यम से चयन किया गया है। जहां यह ध्यान रखा गया है कि सैंपल की प्रकृति पूर्णत एवं अधिकतम सीमा तक प्रतिनिधिक हो।

निदर्शन का प्रकार एवं विधि :

शोध समस्या को ध्यान में रखते हुए यह अनिवार्य था कि सैंपल इस प्रकार का हो जिसे समस्या की समझ हो, अर्थात जो वर्ग चंदेरी की आवाज को सुनता हो। अध्ययन में उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि एवं सुविधाजनक निदर्शन विधि के माध्यम से इकाई का चुनाव किया गया है। जब शोध समस्या की प्रकृति वैशेषिक होती है तब निदर्शन के लिए उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि का प्रयोग किया

जाता है, क्योंकि यह शोध समस्या विशेष प्रकार की है। उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के माध्यम से चंदेरी कस्बे में रहने वाली सेहरिया जनजाति का चयन किया गया। अध्ययन में उन्हीं उत्तरदाताओं को शामिल किया गया जो रेडियो और खासतौर पर चंदेरी की आवाज को सुनते हो।

इस प्रकार के अध्ययन में सबसे बड़ी समस्या होती है उत्तरदाता के चयन की, क्योकि सभी जनजातीय समुदाय के सभी श्रोता बात करने को तैयार हो या फिर इस प्रकार के शोध के लिए समय दें, यह संभव नहीं होता है। ऐसे में दूसरे स्तर पर अध्ययन के लिए सुविधाजनक निदर्शन का प्रयोग किया गया, ऐसा करना शोध की आवश्यकता के अनुरूप और प्रासंगिक था। अतः हमने वैसे लोगों को ही अध्ययन में शामिल किया जो श्रोता भी थे और बात करने के लिए तैयार भी थे। इस प्रकार से अध्ययन के लिए सेहरिया जनजाति से 100 उत्तरदाताओं का सुविधाजनक निदर्शन विधि के माध्यम से चयन किया गया।

अनुसंधान उपकरण :

अध्ययन में तथ्यों के संकलन के लिए अनुसूची का प्रयोग किया गया है। क्योंकि उत्तरदाताओं में ज्यादातर लोग निरक्षर थे और सामान्यतया यह देखा जाता है कि साक्षर उत्तरदाता भी स्वंय प्रश्न का लिखित उत्तर देने से कतराते है। ऐसे में अनुसूची का ही प्रयोग करना तर्कसंगत होता है। अध्ययन में कई प्रश्न ऐसे भी होते है जिनका उत्तर देना कई बार उत्तरदाता के लिए मुश्किल होता है या फिर वह उत्तर देना ही नहीं चाहता, ऐसे में शोधकर्ता की उपस्थिति काफी मायने रखती है, जो उत्तरदाता के मनोभावों को देखता रहता है एवं उनको उत्तर देने के लिए प्रेरित भी करता है।

तथ्यों की विवेचना :

सैंपल सर्वे से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार अध्ययन में शामिल इकाइयों में से 60 प्रतिशत उत्तरदाता प्रतिदिन रेडियो सुनने वाले है जबकि 40 प्रतिशत कभी–कभी रेडियो सुना करते है। इनमें से शत–प्रतिशत उत्तरदाता चंदेरी की आवाज से प्रसारित कार्यक्रमों के श्रोता है। जिनमें 30 फीसदी उत्तरदाता रेडियो सेट से जबकि 70 प्रतिशत उत्तरदाता मोबाइल माध्यम से कार्यक्रम सुनते है।

श्रोताओं के पसंदीदा कार्यक्रमों में लोकगीत, स्थानीय संस्कृति से संबंधित कार्यक्रम, स्थानीय मुद्दों पर कार्यक्रम, कृषि की जानकारी आदि है। वे लोग रेडियो कार्यक्रमों को तीन कारणो से सुनते है– पहला, कार्यक्रम में स्थानीय समस्याओं को फोकस किया जाता है। दूसरा, अपने आस–पास की बातें सुनने में अच्छा लगता है और तीसरा, कई बार अपने जाने–पहचाने लोग ही कार्यक्रम में शामिल होते है। फिल्म संगीत के अलावा जब लोकगीत शुरू होता है तो महिलाएं उसे सुनना ज्यादा पसंद करती है। लोकगीत एवं संगीत के कार्यक्रम सुनना 80 फीसदी महिलाओं को अच्छा लगता है।

20 फीसदी उत्तरदाताओं ने रेडियो से प्रसारित कार्यक्रमों में शामिल होने की बात बताई, वही लगभग 80 फीसदी श्रोताओं ने कभी किसी कार्यक्रम में भाग नहीं लिया है। 40 फीसदी उत्तरदाताओं का मानना है कि रेडियो पर स्थानीय मुद्दों को फोकस किया जाता है जबकि 60 प्रतिशत ने इस पर अपनी कोई राय नहीं व्यक्त की।

20 फीसदी उत्तरदाताओं को रेडियो पर किसी न किसी रूप में कार्यक्रम प्रस्तुत करने का मौका मिला है जबकि 80 प्रतिशत ने कभी कोई कार्यक्रम प्रस्तुत नहीं किया है। 30 प्रतिशत श्रोताओं के परिचय के अन्य लोगों ने कार्यक्रम प्रस्तुत किए है, वहीं 70 फीसदी उत्तरदाताओं के नहीं।

चंदेरी की आवाज के माध्यम से स्वास्थ्य–सफाई एवं बच्चों को स्कूल भेजने की बातें सुनकर लगभग 40 प्रतिशत लोगों ने उस सलाह पर अमल किया है जबकि लगभग 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने ऐसे कोई कदम नहीं उठाया है। लगभग 20 प्रतिशत महिलाओं को यह पता है कि हाथ धोकर भोजन करना चाहिए जबकि 40 प्रतिशत पुरूषों को भी यह जानकारी है। पल्स पोलियो एवं टीकाकरण के अन्य कार्यक्रमों की जानकारी भी 40 प्रतिशत लोगों को चंदेरी की आवाज के माध्यम से हुई।

मात्र 10 फीसदी उत्तरदाताओं ने किसी स्थानीय समस्या पर अपनी बात रेडियों के माध्यम से उठाई है जबकि 90 प्रतिशत लोगों ने कभी अपनी बात रेडियो के माध्यम से नहीं उठाई है। जन–प्रतिनिधियों एवं जन–सेवको से संबंधित कभी कोई समस्या रेडियो के माध्यम से श्रोताओं द्वारा नहीं उठाई गई है। मात्र 10 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने रेडियो की मदद से स्थानीय समस्याओं पर अपनी आवाज बुलंद की है जबकि 90 फीसदी उत्तरदाताओं ने कभी ऐसा नहीं किया है।

निष्कर्ष :

सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों एवं अर्द्ध–सहभागी अवलोकन से प्राप्त अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि रेडियो अपने स्थापना के वास्तविक लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सका है। परंतु क्षेत्र में बिजली की उपलब्धता एवं अगर कार्यकाल के वर्षों के आधार पर रेडियो की उपलब्धि को औसत माना जा सकता है। क्योंकि रेडियो ने मात्र दो वर्षों में लोगों में स्वास्थ्य, आधुनिक कृषि एवं स्थानीय समस्याओं के प्रति बहुत हद तक जागरूकता फैलाने का कार्य किया है। फिर भी स्थानीय लोगों को अपने प्रसारण से ज्यादा से ज्यादा जोड़ने के प्रति संगठन के कर्ता–धर्ता बहुत ही उदासीन मालूम होते है।

जहां तक सेहरिया जनजाति का प्रश्न है रेडियो ने उनकी समस्याओं को बहुत ही कम उठाया है। हालांकि रेडियो के कारण उनके बीच जागरूकता बढ़ी हैं, परंतु उनकी आवाज को बुलंद करने के लिए और उनमें अधिकार चेतना के प्रसार के लिए कारगर प्रयास नहीं किए। ज्यादातर आदिवासी सूचना, स्थानीयता के प्रति रूझान एवं मनोरंजन के कारण से रेडियो को सुनते है। जबकि विश्व में कई सामुदायिक रेडियो आम–जन की आवाज बनकर उभरे है। उन्होंने आम आदमी के साथ होने वाले दोयम दर्जे के व्यवहार, उसकी आवाज को प्रशासन द्वारा नहीं सुनने के खिलाफ व्यवस्था के साथ खुली जंग छेड़ रखी है। भारत में भी मंदाकिनी की आवाज प्रशासन एवं आम जन के बीच एक सेतु का कार्य कर रही है।

कई ऐसे रेडियो संगठन है जो आदिवासियों की समस्याओं को पुरजोर तरीके से उठा रहे है। परंतु चंदेरी का आवाज के प्रसारण केन्द्र से महज आधे किलोमीटर की दूरी पर होने के बाद भी सेहरिया समुदाय को रेडियो से विशेष लाभ हुआ हो यह देखने को नहीं मिला। ऐसे में सामुदायिक रेडियो संगठनों को अपने स्थापना के मौलिक लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए कार्य करना होगा।

यहां सबसे महत्वपूर्ण बात यह देखने को मिली कि जिन समूहों को हाईलाइट करना आवश्यक नहीं या फिर समाज का जो वर्ग पहले से ही सशक्त एवं जागरूक है, चंदेरी की आवाज उन्हीं को जागरूक बनाने को फोकस करती है। जबकि चंदेरी कस्बे से ही सटे सेहरिया समुदाय को लेकर वहां के कर्ता–धर्ता बहुत चिंतित नहीं है और न ही उनमें इस आदिवासी संस्कृति के संरक्षण को लेकर बहुत ज्यादा जागरूकता है। ऐसे में शासकीय उपक्रमों को जनजातीय कल्याण की योजनाएं बनाते वक्त जमीन से जुड़ी बातों एवं आदिवासियों की वास्तविक समस्या को फोकस करना चाहिए।

सुझाव :

रेडियो को स्वयं के प्रचार–प्रसार पर ध्यान देने की आवश्यकता है।
ज्यादा से ज्यादा सेहरिया जनजाति को अपने कार्यक्रमों से जोड़ने की जरूरत है।
समाज की वास्तविक समस्याओं एवं सेहरिया आदिवासियों के व्यापक स्तर पर हो रहे शोषण को हाईलाइट करना चाहिए।
अपने कार्यक्रमों की गुणवत्ता को सुधारना चाहिए एवं सेहरिया लोक–संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए।
समाज के वंचित एवं पिछड़े तबको की आवाज को बुलंद करना चाहिए।

संदर्भ :

http://en.wikipedia.org/wiki/Saharia
http://en.wikipedia.org/wiki/Tribals_in_Madhya_Pradesh
http://www.ummid.com/news/2011/July/30.07.2011/community_radio_planned_in_mp.htm
http://en.wikipedia.org/wiki/Community_radio
www.thehoot.org
Sakshi Abrol
http://www.youthkiawaaz.com/2011/02/community-radio-for-rural-development/

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net